

ASHA ARCHIVES

2597

SHRI 11.11.15

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
नामो भगवते वासुदेवाय ॥
थमंतावत्संविद्धा नान्यथा ॥
सर्वथा ॥ अथ गिरिगुहाकृतं
वृ॥ चकलि ॥ १ ॥ गुहाया

अथ कुरुगुहाकृतं राजसूय
ज्जकुरुगुहीचधुमहावायव्य ॥ प्र
कुरुगुमातनवागुमाज्जिप्रव ॥
गकलवृनदीनीप्रयू ॥ स ॥ १ ॥
वासामासुयवृयममायकम

दीप
नीमहाधियस्यथमगावकुचवच्चवाधिसत्वान्निगारदागामनां कुरुत्वाहस्यदिरु
मूहह्वरु ॥ प्रथमं लवशकुमारी ॥ द्वितीयं केन ॥ त्रिंशत् लवशकु ॥ चतुर्थं मदिना ॥
मायकैव ॥ ५ ॥ उपक्राविषासेन ॥ ६ ॥ अविहावनि ॥ ७ ॥ गन ॥ ८ ॥ सिल्ली ॥ ९ ॥ नम ॥ १० ॥ उ ॥ व
ऊ ॥ व ॥ नील ॥ य ॥ ह ॥ र ॥ ॥ ११ ॥ पूर्व ॥ ॥ १२ ॥ उ ॥ व ॥ ऊ ॥ क ॥ क ॥ नी ॥ व ॥ न ॥ ध ॥ य ॥ ह ॥ र ॥ ॥ १३ ॥ द ॥ क्रि ॥ ॥ १४ ॥ उ ॥ व ॥ ऊ ॥ च ॥ व ॥ ॥ १५ ॥ स ॥ ह ॥
सन ॥ स ॥ च ॥ न ॥ ॥ १६ ॥ य ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥

क

उरुच ॥ उंचधुमहाबासदागीर्णनक्र २ सात्तन २ वध २ रुद्र २ हं २ रुद्र की बयान
सर्वइष्टविष्टानुजाकिनीनीमपदवंगहृत्तपिगभवायानरुचविष्टवनिष्ट
थाकिचयानसर्वइष्टानुमनुमनुबास २ वध ॥ गग ४ ठि वउ उं ओ ४ हं ॥ गग ४ प २ थ
जिनमनुक ॥ उं गन्यानाहिनवजस्रहावात्मका ३ हं ॥ पनविगुष्टिमनस्रवग ॥ उं ४
हं वहा ४ उत्यादयान् ॥ सर्वचिरुनीधर्मास्रहावहउके ॥ गग ४ कन ४ मत्याश ५

बासदाहं रुद्र ॥ उंचक्र २ संचलनपचल २ प्रवद्र ॥ महाकाधवपाय २ बालय २ उं
वधुमहाबासदाहं रुद्र खाहा ॥ उं विकृताननयचववरु ४ नरु ४ २ गग ४ य २ वज
महासनहं रुद्र ४ ग ४ हहाहीहीहं ॥ उंचधुमहाबासदाहं रुद्र ॥ उं दह २ पच २ सथ २
कल २ कालय २ मसय २ गक्र २ कल २ काल २ उंचधुमहाबासदाहं रुद्र ॥ उं यमान
कडी ४ हं २ रुद्रागय २ वधुपचधुहं रुद्र ॥ उं हिलि २ रु ४ हं रुद्र ॥ उं विलिमिलि

क

किंन ४ माया माहामहावाधिनाम्माया विवर्जयन् बालक कनर वत्ति द्विदिल
कृदाजकिनीशमनीयत्प १० पञ्चलक २६ किं पनर्द गलकृपवे ४॥ यत्किं किं कर्मा
दिलकृकनकावयद् ४॥ काठिजापञ्चलुयारु वत्ति द्विदवनाकावमर्हि हि ४॥ स
फकाठिजापनजायनरुक्चवीपद ॥ गालिविवहिनायायागीमन्तुपानहिनीनय
यदिजायसन्तुस्वच्चावडावाहिस्पनस्य निवयागियागविशुच्चावहकारु

रुमय्यादि समागच्छहदिमध्वविहावयन् गार्हकावैरुर्कसन्निहैस्यस्यमधुल
मान्कस्यैपठनिर्वाधामहादहिनीयश्चरमिमासायर्कपञ्चवच्चायमाहिनीन
गृहस्यैपञ्चवच्चाणीगुहापन्मान्मादनीर्गोकाहोकादिमत्वानीहृयाकृपापदस
नाञ्जनेविक्रमनाध्वयागार्हकावहदिनीर्गर्गार्हकावपिनीर्गस्यस्यमधुलरु
कावविनिर्गर्गमपयागपहञ्जने ॥ उंकावपरिधानीवञ्जपशिधनपर्वकसर्वस

क

त्वार्थहृत्कं विरुवय ॥ द्विजुजं च तमोलिनीनाथपक्षमिषापविहृषिर्न ॥ अद्वय
हानवागिकान्तसवारवज्र विहृषिर्न सूर्यमधुलसमायुक्तं फूलद्वयं शुनिर्मलं ॥
वासनऊनीपाभीपक्षमडापक्षमिहृषिर्न वाद्यवर्मपविधानं ॥ काष्ठमालीनिर्देश
कं ॥ अग्निमेखासकनार्थजुठभीपक्षमनिर्हं ॥ निषीयमानदधुं द्वाष्टं च गुमचि
रयानकं ॥ वक्तव्यद्वितीयवीपीगंलक्ष्मणमश्निर्न रवभवत्तुम्यहर्नानानावत्वा

६३

कृशविकल्पयन् ॥ संपर्कं हृद्यविहृषिर्न रागधरागविवर्जितं ॥ अकार्यमडाग
सर्वतस्मादकार्यमोलिनी ॥ ॥ अग्निमिहृषिर्न वीपाद्ययगीवधुमहावापरा
साधनं समाफ ॥ ॥ अथानुपरासावउध्वंभीमोलिनीउध्वकथाममकुंसा
वर्ण्यहं ॥ नानाविहृषिर्न दानिमकुयन्तु ॥ रथीकिर्यकलविबनिर्जनसावर्ण्य
हं च यथा अग्निनादकनकाष्टेहिहृषिर्न शनगिनि ॥ समनयथाशीर्यनगमगर्भं

क

नक्षत्रयोंकचवीरस्यसाधनी॥पविष्ठमिमहासर्ववीरवीरस्यचर्या॥समस्तुहडपवि
 एष्टावअवलमिमिकिसर्थनामसिंह॥॥लगवानाह॥हडमकैतव्यावीरनक्त
 यामिसमासग॥अकावधकिमाख्यानवकावध॥पिकिसचन॥लकावनकुकिमच
 नकीदृगीसैरुकीनचवचलनितल॥चलकमान॥कपिचलनधनुनामनकार्थवान्॥
 नक्षत्रवअकावध॥अकाभासगुस्वरूपनिरुचिगमनीकूलैजकमिसखादरहिनेरुमि

धर्मवक्रसहावमिति॥नदवैकथपनिपरिष्पान्॥यद्वैकमडार्थधर्ममडायाध
 र्माधुस्वरूपं॥नदवहत्वात्मकत्वान्॥कथकवधसहावमिति॥नक्षत्रमस
 र्थासाध्याहावनकथमिहमिमिति॥नदवैजसैरुकीमनाधर्मवाधिसैरुगालकृदो
 ॥॥नदवामनसिकामास्वरूपात्मकमितिमनीगवी॥नक्षत्रवक्रवावहायाअकावध
 अकमिममितिगथावकहविस्तवहयान्॥पवहान्॥किन्नाकावचकनक्तार्थ

क

उार्धः पवित्रालकं ॐ निः ॥ अथ धनदीनया ॥ सर्वसमृद्धसमपगता ॥ बगुर्मडासमासनसह
ऊर्ध्वपुष्टिगं ॥ ॥ ॐ ह्यकलवीरस्य चकार ययी सत्तना ॥ अर्धिमिययविष्टद ॥ ॥
अथ आह ॥ लकाचदा किमकमिति ॥ लकलदा विनिमर्कं लकालकसमचिनी ॥ ललिनकी
जसमायुर्कं गनलकाचमिति पुमिहिगं गथाह ॥ लकालकं गसाकथं पुमिपलिह्याग
॥ लकदगं नाकीनया ॥ ॐ तिदग्निजूर्कचप्रवर्तन ॥ सफमीविवचनत्वाग ॥ विकल्वने

हावगप्रहकत्वाग ॥ लक ॐ निः ॥ अथ विकल्पिगमनमनः कल्वनयत्वाग ॥ अलक ॐ निः
॥ पनलकगहधममधुलहावराया धर्मचक्रप्रवर्तन ॐ निः ॥ अर्कलकादेल ॐ निः किं गु
हावमानविषयकादगं दानसमाय ॥ अथ कलललिनकी ॥ अथादिललिनकी ॥ उपायमहा
वसमिगिननककावरावकथं उत्पन्नसहजयथापिकुमिसीयथा धन्यादकं चनहिंधा
न्यवगिचकदा अर्कचात्वालिः ॥ गदवयथापिसमचासंहावननहिलिन्नत्वाग ॥ किं नु

क

यागविदानर्था ॥ अकाराखरावमिति नर्कधीसबासना नर्कयतीति ॥ नर्कनीसबासुर्व
नागाक्षममिति ॥ नयार्तर्कनेयागमित्यर्थ ॥ खञ्ज आकासगगशखरूपेनदिमानात्मक
स्वरूपधृतिः ॥ अमिकिन्निश्चाकप्रतिपल्लिहना ॥ दगकाधमर्लिः ॥ कुधराष ॥ कुधम
दाविरुसमेकना ॥ यप्रवर्तन ॥ धगुनामनका ॥ थलागू ॥ अमिमेशीका ॥ धमूकर्मवर्क
॥ निलवर्क ॥ वा ॥ वाद्यवर्मायविधाने ॥ विगर्तज्येवाद्येगसावर्मागम्यतीति ॥ गत्यविधा

६५
११

ने ॥ अयविमेषिकिसकनकाधमकस्वरूपमितिल्लानवी ॥ ॥ ॐ ॥ एकल्लवीवाखाः
वाक्कविवायधत्तुर्थपविष्ठद ॥ ॥ अथान ॥ र्पवक्कासिमनुमयुलय ॥ अमीसा
मधमिनकविल्लान ॥ नानात्राटनीग ॥ ॥ वगर्धकुरिपयाग ॥ सामर्थवद्वद्वीवि
दू ॥ ॐ ॥ जंजींजं वधुचयवदू ॥ पवदू ॥ करु ॥ पुसू ॥ व ॥ हन ॥ ग ॥ स ॥ त ॥ न ॥ ॥ ऊ ॥ रु ॥ य ॥ न ॥ ल
य ॥ मा ॥ रु ॥ य ॥ ॥ सर्व ॥ स ॥ क ॥ धी ॥ म ॥ ख ॥ व ॥ न ॥ ध ॥ न ॥ क ॥ र ॥ ॥ सर्व ॥ ग ॥ कि ॥ नी ॥ नी ॥ य ॥ ह ॥ रु ॥ पि ॥ ग ॥ व ॥ वा ॥ धि ॥ य ॥ क ॥ ॥

क

धर्मिण्यस्य २ सन् २ मान्य २ च धुन्युक्त २ २ वद ह व धुमहा वा स धा सर्वे ज्ञापयति उं व
 धुमहा वा स धा हू हू ॥ अ न लं ३ र ऊ प ण लिखा पाद गं द ल प द म ॥ धा कू कू मा स म च न
 या न कू क न लिख न् ॥ वा हो क ॥ ध धा न य न् ॥ क र्क स ण धा व स य न् ॥ ०० मि न कू वि धि
 ॥ ॥ अथ ४ प वि ऊ या दि लिखा ण य न् सर्व ग हा अ प स न कि ॥ अथ नाम ल पा र्धु क ष कः
 लिखा प वि मा वि से स ह दा प य न् र कू ॥ १ ॥ अ का हि के ध मि यं हि के खा हि के वा णु र्ध की सा म्ब

१२

स वि क या व न् ॥ कू ला नि ना ग र्ग मि ॥ अथ स र्द्धे का द ग म कू ना म कू स वा व स म् ॥ लिखाः
 दाल जाल म्ब य न् ॥ अहि न वा ला न वि कू र्क वा मि ॥ अथे त स न्क र्ग म म ख म्ब स लि स न्क
 प वि स न्क य मा स्रा द य मि ॥ ॥ अथ ४ य न् कू र्क व कू र्क र्क प ण लिख द वी द्वि उ र्क र्क कू म
 स न्नि र्ण य म् कू र्क ग ह कू र्क कू मा कू र्क लि स र्ग कू म द स म्ब न कू र्क कू र्क कू र्क कू र्क कू र्क
 वि द र्क य स न्क कू र्क धा ना र्क ह दि स र्क कू र्क ॥ उं का न गि व सि द यान् ऊं का र्क न या ह

क

यथाकीलयश्चतुष्पाथनिषनगूपतिवादिनामखीली॥ ॥ॐ सर्वमात्रहं न हं
 दू॥ जगत्सर्गपूर्वाकीविधाननसाधनामविदहिर्गकृत्वापादोकीलयगु॥ मात्रिवा
 तिहृत्प्रयति॥ ॥ॐ संगासनमाहनायहं हू॥ जगत्सर्गमिषावन्ध॥ ॥ॐ यमद
 ममादयचधुमहावाषशहं हू॥ ॐ निपायशगस्य हू॥ ॥ॐ काधनसंका
 धन२ हू॥ दनायहं हू॥ ॐ निमलमनु॥ ॥ॐ अयश्चक्रनिर्जिगयकहीहीहाहा

१४

हू॥ अयश्चक्रादयश्चोर्ध्वकर्मकच२ॐ चधुमहावाषशहं हू॥ जगत्सर्गवचयशीप
 वज्रकुविनासनेममभनकर्णगसीलिवानीलमृगशवस्यगु॥ वाह्वन्धनग४ कृत्वा
 पञ्चकुविनासयगु॥ ॥ॐ लक्ष्मीचलनपचल२ महाकाधवपायचल२ बाल
 य२ॐ चधुमहावाषशहं हू॥ ॐ निममभनरुसाकूर्फसमीचगुर्दमर्वावाक्षारुच
 गताहिमर्कुर्गकृत्वाविपगहृप्रक्रियन्॥ अथपरुलिकीचालनिषनगु॥ सफाहना

क

चाटयति॥ ॥ उं विरुगाननपचवलीरुं २ ॥ कुरुय २ वज्रपा ॥ धनवन्ध २ हूं रूद्रका
४ रुहाहीहीरुचधुमहाबासदाहूं रूद्र ॥ ॥ नगसर्पुर्जुह विडयागालकनलिखासदः
नएलुविकायास ॥ ॥ प्रक्रियाजस्यार्गमनिकिलयग ॥ चल्या ॥ धामखीकल्पनिमनग ॥
ननागामनीवेनपुकीलिर्गहवति॥ ॥ उं दह २ पच २ मथ २ कच २ कानय २ ॥ मय
२ गङ्ग २ कल २ काल २ उं चधुमहाबासदाहूं रूद्राहा ॥ ॥ ॐ निगमभनकल्याटलिखद

१३

स्युलपमानदवदहं विषवाजिकयामालामनुपनिवक्ष्यम्भसदनपलुविकाया
प्रक्रियापन ४ लहिका ॥ ॥ मयप्रक्रियग ॥ ॥ उं चधुमहाबासदाहूं रूद्र ॥ ॥ नगसर्पुर्जुह विडयागालकनलिखासदः
हूं रूद्र ॥ ॥ नगसर्पुर्जुह विडयागालकनलिखासदः ॥ ॥
उं यमानक ४ उं ४ मु ४ हूं गाय २ चधुपचधुहूं ३ रूद्र ॥ ॥ ॐ एकमहिषपनायन ॥ ॥
उं हिलि २ रूद्र २ ॥ ॥ ॐ एकसूर्य ४ पनायन ॥ ॥ मर्मा २ ॥ ॐ एकवाद्यपनायन ॥ ॥ वेद

क

ध४॥ अलिमन्त्र अनेनेवा शरुनगर्गजगत् ॥ परमगमनिक्रियापद्वर्जनस्यमितिक
धाम् ॥ ॥ उं चूं चूं चूं ॥ अस्य २ धार २ वन्ध २ उं चूं महामासदाहं हूं ॥ ॐ गिगवाहिकी
नकीसफार्गुलपमान् अक्षरुनगर्गाहिसन्कीरुगवासाय निखन ॥ कीर्तनमुवर्गधुर्व
॥ उधनमाक्र४ ॥ निवकाकाचगक्षपताग्निनीदाहयगूनर४ ॥ ॥ उं चूं महामा
सदा अमकमकाचाठयहं हूं ॥ अक्षरुनगर्गाहिसन्कीरुगवासाय निखन ॥ ॥

१०

अमहउचाठयटिसकूरुमन्त्रसर्वार्थवेनागकार्याविचानधाम् ॥ यधमानोपरासः
नविनाधिनान्याईलिससमादायहनृयधर्षपुनिरुन्धानीविद्वसयन् ॥ अकन
नागकार्याविचानधाम् ॥ गगरीमन्त्र४ ॥ ॥ उं चूं चूं चूं चूं ॥ अमकमकाचाठयहं हूं
उं चूं महामासदाहं हूं ॥ ॐ गिगवाहिकी ४ ह्यकर्मसमालिखतालकनसडंगुलेचु
षादसूकीकावीक्रीकावीमसमधनजहं हिप्रानगसाधकं ० पृष्ठ ४ परमालामन्त्रः

क

मुसं व फ ४ प ३ अ म ल रु न ॥ ॐ निकापचिपुन्यासकर्मचिनाच्छादयन्
कासुशसर्वकपादं प्राकृतिप्रिपन् ॥ ॥ वामगम इनानादयन् अमकामवर्षरु
वृणुसफवाचानयावगुसर्वपीसुधमीमखसुसुनैरुवनि ॥ उं वधुमहाबासदाजंजी
जं धाववपचठ २ पचठ २ घन २ घाठय २ कह २ पसुन २ पसुनय २ कीलय २ ऊरुय
२ ऊरुय २ माहय २ हू हू ॥ गजारीमालासक्त ॥ ॥ अथकावन्धिर्गहिंत्वाहलित्वा

गुमकुमयगयस्यनाम्नागसेवविहारीप्रक्रियन् ॥ काकनखायगमदधी ४ ॥ उं काक
कहनीकचनीखाहा ॥ दवदरुकाकनरुआपयचधुमहासनाहापयनिहू हू ॥
ॐ निमनुं काकचनीलिखाक ॥ धननमाक ४ ॥ ॥ अथगवसीवक्रुक्रुकपशर
मचसपयक्रुचिवाज्जबकोमनकसामालीगूननचर्हिगामीपदपदधवनीगहिंनस
दिगामी ॥ ॐ ह्यगसामनु ॥ उं आकय २ माहय २ अमकितवगकनखाहा ॥ उदवकीर्ण

क

संगमगच्छन्निनिकानयन्॥ अमिगारु अनामिकानकनसहवटिकीकलापर्या
कामनु॥ हिसन्धुषानपानदागवीवभंरुवतिनसंगयशमनपशमाशक्तिनिहंध
नदानपुयधकिंवहूनाकननकेवीमानसंगहेकिमनोधनकवहूविष्कवेयराविः
नात्मकनेवीसिध्दनि॥ ॥ अथासुलविधानेहवजाकुरुत्वालिमलापकनगशमीम
हहावकीसम्पन्नानापयापधिरिगं॥ अमपिगिनसमायकीकालि३२समपः

हं॥ अहिसिकनरुगकुरुवीसर्वभाधनी॥ भागभनादोहाननुयथाहदानऊायनवा
हईवकूयनिर्यकालि३२पवगयन्॥ सर्वभगत्सधंगलक्रमनुसाजान३गुच
हकानगगायमिषायगगायभनधंयरी॥ दग्धिरुनुमिद्वार्जकल्लवीरसासाध
नीवावअलयन्बकलधायीनसन्निहं॥ उच्चाठनधसवर्धुनुमावहीकर्मसन्निहं॥ नी
लवर्धुंहावयत्माश्रुकर्मकर्मश्रुवमपुष्टिकवाठिसर्वकर्मधिज्वलवानपभः

क

दमः ४ रावनात्मकस्वप्नपक्षपातावर्तपक्षपक्षुविषाहं हृदय ॥ ॥ ॐ नमो भगवते ॥
वीरपतिरुदकचक्रहृदयललासनामालिप्तमयसमार्पण ॥ ॥ अचलहिसमयप
सिद्ध ४ ॥ ॥ यधार्माद्यादि ५ ॥ ॥ गुरुसंगलेखवक्तुसर्वदा ॥ ॥ गुरु ५ ॥

आशा शरकाधि

२ 597

ASHA ARCHIVES